Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
दिनांक - 29.04.24

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ-3 'मातृभूमि का मान' (एकांकी) लेखक - हरिकृष्ण 'प्रेमी'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या अट्ठाईस पर दिए पाठ-3 'मातृभूमि का मान' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे। यह कार्य आपको 02 मई, 2022 को भेजा जा रहा है।

बच्चो! आज हम पाठ-3 'मातृभूमि का मान' एकांकी को आरंभ करने जा रहे हैं। आप अपनी-अपनी पुस्तक एकांकी संचय पर दिए इस पाठ को खोल लें और अपनी-अपनी उत्तर-पुस्तिका निकाल लें। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आपको तीन मिनट दिए जाएँगे। उन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आपका ध्यान पाठ पर ही केन्द्रित रहना आवश्यक है। आशा करती हूँ कि अब आप पुस्तक और उत्तर-पुस्तिका लेकर बैठ गए हैं और पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित एकांकी 'मातृभूमि का मान' एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक एकांकी है। यह एकांकी चार दृश्यों में विभाजित है। यह एक देशभक्त, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय सम्मान, वीरता एवं पराक्रम के गुणों से सुसज्जित एकांकी है। यह एकांकी मातृभूमि के मान की रक्षा को केन्द्र में रखकर लिखी गयी है। अतः देशवासियों में

CamScanner

एकता, अखण्डता बनाए रखना एवं मातृभूमि की रक्षा करते हुए बलिदान की भावना को जगाना ही एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य है।

बच्चो ! अब इस एकांकी के पात्र-परिचय भी जान लेते हैं। इस एकांकी के पात्र हैं :- राव हेमू, महाराणा लाखा, वीर सिंह, अभयसिंह। चारणी और वीर सिंह के साथी अन्य पात्र हैं। आइए, इन पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

पात्र-परिचय

1. राव हेमू - राव हेमू वीर हाड़ाओं के वंशज और बूँदी के शासक हैं। वे वीर, कर्त्तव्यनिष्ठ, पराक्रमी, स्वाभिमानी, विवेकशील और सच्चे देशभक्त हैं। वे मेवाड़ जैसे समृद्ध और शक्तिशाली साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर देते हैं। वे प्रेम का अनुशासन मान सकते हैं लेकिन शक्ति का नहीं। वे स्वतन्त्रता प्रिय, विवेकशील और मानवीय मूल्यों के पक्षधर हैं।

2. महाराणा लाखा - महाराणा लाखा मेवाड़ के शासक हैं। वे वीर, विवेकशील तथा वीरता का सम्मान करने वाले शासक हैं। वे सभी असंगठित राजपूतों को संगठित कर विदेशी शक्तियों का सामना करना चाहते हैं। बूँदी के शासक राव हेमू के हाथों मिली पराजय से आहत (घायल) होकर प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक बूँदी में वे ससैन्य प्रवेश नहीं कर लेते तब तक अन्न-जल भी ग्रहण नहीं करेंगे। चारणी के समझाने पर वे विवेकशीलता का परिचय देकर बूँदी के नकली दुर्ग को तहस-नहस कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का विचार करते हैं। वे वीर सिंह की वीरता देख उसकी वीरता का सम्मान करते हैं।

3. अभयसिंह - अभयसिंह मेवाड़ का सेनापति और महाराणा लाखा का विश्वासपात्र है। वह एक बुद्धिमान, वफ़ादार, चतुर, वीर और दूरदर्शी है। वह बूँदी के राव हेमू के पास महाराणा लाखा का संदेश लेकर जाता है। वह महाराणा लाखा को हाड़ाओं द्वारा मिली पराजय की ग्लानि से मुक्त करते

हुए स्वयं को दोषी बताता है। महाराणा द्वारा ली गई प्रतिज्ञा की पूर्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति सचेत करता है। वह शांतिपूर्वक समझाता भी है।

4. वीर सिंह - वीर सिंह मेवाड़ की सेना का एक सिपाही है, लेकिन उसकी मातृभूमि बूँदी है। उसे अपनी मातृभूमि से अगाध प्रेम है। वह अपनी जन्मभूमि बूँदी के दुर्ग की प्रतिकृति के नष्ट होने के अपमान को भी सहन नहीं कर सकता। वीर सिंह अपने नाम की भाँति ही वीर है। अतः वह छद्म युद्ध को भी वास्तविक मान अपने प्राणों की बाजी लगाकर युद्ध करता है। उसकी वीरता, साहस, पराक्रम व मातृभूमि के प्रेम को देखकर मेवाड़ के महाराणा लाखा भी उसकी प्रशंसा करते हैं।

बच्चो! अब एकांकी को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। एकांकी का आरंभ पहले दृश्य से होता है। स्थान बूँदी गढ़ है। बूँदी के शासक राव हेमू अपने कक्ष में मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से बातें कर रहे हैं। अभय सिंह मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा का संदेश लेकर राव हेमू के पास आते हैं। अभयसिंह राव हेमू से कहते हैं कि आज राजपूतों को एक सूत्र में गूँथे जाने की आवश्यकता है और इस कार्य को करने की सामर्थ्य और शक्ति महाराणा लाखा में है। अतः उन्होंने मुझे आपके पास एकता के सूत्र में बँधने का प्रस्ताव भेजा है। वे चाहते हैं कि बूँदी प्रदेश मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले। वीर राजपूतों का प्रांत कहलाने वाला राजस्थान अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध रहा है। परन्तु वे अपनी मातृभूमि की आन-बान और शान के नाम पर आपस में लड़ते रहते हैं। जब किसी विदेशी आक्रमण का मुकाबला करना होता है तब वे एकजुट होकर उनका मुकाबला नहीं कर पाते। राजपूतों की शक्ति टुकड़ों में बँटी है। महाराणा लाखा चाहते हैं कि सभी राजपूत राजा मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर लें। एक शक्ति के अधीन आ जाने से वे विदेशी हमलों का एकजुट होकर मुकाबला करने में समर्थ हो सकेंगे। सेनापति अभयसिंह

के अनुसार जो व्यक्ति यह माला तैयार करने अर्थात् राजपूतों की छिन्न-भिन्न शक्ति को एकत्रित करने की ताकत रखता है, वे महाराणा लाखा हैं। राव हेमू अभयसिंह की बात सुनकर कहते हैं कि ताकत की बात छोड़ो, केवल महाराणा लाखा ही राजपूतों को एकता के सूत्र में बाँधने की शक्ति नहीं रखते, बल्कि हर राजपूत को अपनी शक्ति पर गर्व है। महाराणा लाखा राजपूतों के एकीकरण का जो दंभ भर रहे हैं उस दंभ (घमंड) को वे भूल जाएँ इसी में उनकी कुशलता है। छोटे-छोटे राजपूत राज्य एकीकरण के नाम पर उनकी अधीनता स्वीकार करने की बजाए उनके खिलाफ़ तलवार उठा लेंगे और उनसे युद्ध करेंगे अर्थात् महाराणा लाखा ने राजपूतों को अपनी अधीनता स्वीकार करने की बात कह कर एकता की माला तोड़ने की शुरुआत कर दी है। रावहेमू के अनुसार हाड़ा वंश प्रेम का अनुशासन मानने को सदा से तैयार हैं। मेवाड़ की शक्ति के सामने न तो वे झुकने के लिए तैयार हैं और न ही महाराणा के अधीन होकर उनकी सेवा करना पसंद करेंगे। बूँदी स्वतन्त्र राज्य है और स्वतन्त्र रहकर महाराणाओं का आदर करता रह सकता है किंतु किसी के अधीन होना या किसी की सेवा करना वे पसन्द नहीं करेंगे। राव हेमू के महाराणा लाखा की अधीनता स्वीकार न करने पर अभयसिंह प्रस्थान करते हैं।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए विराम देंगे एवं उन प्रश्नों के उत्तर अपनी-अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न 1. अभय सिंह कौन हैं? वे कहाँ आए थे?
प्रश्न 2. राजपूतों को एक सूत्र में गूँथने की सामर्थ्य किसमें है?
प्रश्न 3. हाड़ा वंश किस प्रकार का अनुशासन मानने को तैयार था और किस प्रकार का नहीं?

बच्चो! प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए दी गई तीन मिनट की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. अभयसिंह मेवाड़ के शासक महाराणा लाखा का सेनापति हैं। वह महाराणा लाखा का संदेश अर्थात् बूँदी द्वारा मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव लेकर बूँदी नरेश रावहेमू के दरबार में आए थे।

उत्तर 2. राजपूतों को एक सूत्र में गूँथने की सामर्थ्य महाराणा लाखा में है। इसलिए उनका सेनापति अभयसिंह बूंदी के शासक राव हेमू के पास संधि प्रस्ताव लेकर आया है।

उत्तर 3. हाड़ा वंश प्रेम का अनुशासन मानने को तैयार था वह सिसोदिया वंश का आदर करता रहा है और आगे भी करता रहेगा किन्तु अधीनतास्वीकार करके सेवा करना उन्हें पसन्द नहीं था।

बच्चो ! अब हम एकांकी के दूसरे दृश्य को भी समझने का प्रयास करेंगे। दूसरे दृश्य का स्थान चित्तौड़ का राजमहल दिखाया है। अपने राजमहल में महाराणा लाखा बहुत चिंतित और व्यथित अवस्था में टहल रहे हैं। महाराणा लाखा इसलिए दुःखी हैं क्योंकि एक बार उन्होंने बूँदी के गढ़ पर आक्रमण कर दिया। बूँदीगढ़ छोटा-सा राज्य था किन्तु वहाँ का राजा राव हेमू और उनके सैनिक बहुत वीर थे। वे संख्या में कम थे परन्तु वीरता की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने नीमरा के मैदान पर रात के समय मेवाड़ के सैनिकों के शिविरों में सोते हुए सैनिकों पर अचानक आक्रमण कर दिया। जिस कारण महाराणा लाखा को अपने सैनिकों सहित भागना पड़ा। महाराणा लाखा मेवाड़ के राजा तथा बाघा रावल और वीरवर हम्मीर के वंशज हैं जिन्होंने कभी पराजय का मुँह नहीं देखा था जो रणक्षेत्र से भागने की बजाए वीरगति प्राप्त करना अधिक पसन्द करते थे। युद्धभूमि से भागकर महाराणा ने मेवाड़ के मस्तक पर कलंक का टीका लगा

लगा दिया है। इसी कारण वे दुःखी हैं। उन्हें लगता है कि जाने- अनजाने उनसे ऐसा काम हो गया है जिसके लिए मेवाड़ का इतिहास उन्हें माफ़ नहीं करेगा। उन्होंने मेवाड़ के इतिहास को कलंकित कर दिया है। इसके लिए उनकी आत्मा उन्हें धिक्कार रही है। महाराणा के अनुसार जिनकी खाल मोटी होती है अर्थात् जिन्हें अपने अपमान एवं किसी प्रकार के कलंक का डर नहीं होता, ऐसे लोग कायर होते हैं। वे अपमानित एवं कलंकित जीवन जीने से नहीं झिझकते। ऐसे कायर एवं स्वार्थी मनुष्य का मान-सम्मान नहीं होता। यह घटना भी महाराणा लाखा के लिए मृत्यु से बढ़कर कष्ट देने वाली है। इसी पराजय को वे अपने माथे पर लगा कलंक का टीका मान रहे हैं। वे इस कलंक को धो डालने के लिए प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक वे बूँदी के दुर्ग में सेना सहित प्रवेश नहीं कर लेते तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। अभयसिंह महाराणा लाखा से कहते हैं कि वे ऐसी भीषण प्रतिज्ञा न करें क्योंकि हाड़ा बहुत वीर हैं। युद्ध करने से वे यम से भी नहीं डरते इसलिए कह नहीं सकते कि इस युद्ध में जीत प्राप्त करने में कितने दिन लग जाएँगे। अभयसिंह की बात का उत्तर देते हुए महाराणा लाखा कहते हैं कि राजपूतों के वंशज वचन के पक्के होते हैं और उसे पूरा करने के लिए वे अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं। वे उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार तरकश से निकलकर कमान पर चढ़कर छूटा हुआ तीर कभी लौटाया नहीं जा सकता, उसी प्रकार मेरी प्रतिज्ञा भी वापस नहीं ली जा सकती। इतने में चारणी (जो घूम-घूमकर राजपूतों की वीरता के गीत गाती है) देश व राजपूतों की एकता को बनाए रखने तथा इस एकता की माला को न तोड़ने का गीत गाते हुए दरबार में प्रवेश करती है। उसके गीत राजस्थान के वीरों में वीरता का संचार करने के साथ ही एकता और अखण्डता को बढ़ावा देते हैं। वह महाराणा लाखा से बूँदी प्रवेश पर आक्रमण न करने का निवेदन करती है और कहती है कि हाड़ाओं ने विपदा(मुसीबत)

के समय कई बार मेवाड़ शासकों की सहायता की है। चारणी को दो राजपूत वंशों के आपस में युद्ध करने से उनके मध्य आपसी प्रेम और एकता के टूटने का भी भय है इसलिए चारणी महाराणा लाखा को इस एकता को बनाए रखने के लिए बूंदी प्रदेश पर आक्रमण करने का विचार त्याग देने के लिए कहती है। चारणी की बात सुनकर महाराणा कहते हैं कि तुम बहुत देर से आई हो। अब तो मैं प्रतिज्ञा ले चुका हूँ और इस प्रतिज्ञा को अवश्य पूरी करूँगा। चारणी हाड़ाओं की वीरता से परिचित थी। अतः वह महाराणा लाखा को बूंदी का नकली दुर्ग बनाने और उसका विध्वंस करने का सुझाव देती है। इस प्रकार नकली दुर्ग बनाकर महाराणा अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर सकते हैं। महाराणा लाखा ने चारणी के सुझाव पर चितौड़ में ही नकली बूंदी का दुर्ग बनाकर उसे विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का निश्चय किया। अतः इस कार्य को पूरा करने के लिए वे अपने सेनपति अभयसिंह को नकली दुर्ग बनवाने का प्रबंध करने का आदेश देते हैं।

बच्चों! अब हम इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। आशा करती हूँ कि आपने एकांकी के दोनों दृश्यों को भली-भाँति समझा होगा। आपने इस एकांकी के दोनों दृश्यों को अर्थात् पृष्ठ संख्या 32 तक दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ना है। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ। इस कार्य को आप अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

" महाराव, आज राजपूतों को एक सूत्र में गूँथे जाने

की आवश्यकता है और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने की ताकत रखता है, वह है महाराणा लाखा।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन हैं? वाक्य का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (ii) राणा लाखा बूँदी को मेवाड़ के अधीन क्यों करना चाहते थे?

प्रश्न (iii) वक्ता ने महाराणा लाखा के संबंध में क्या कहा?

प्रश्न (iv) राव हेमू के अनुसार हाड़ा वंश किस प्रकार का अनुशासन मान सकते हैं?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]